केवल यीशु

शांत समय पवित्रशास्त्र अध्ययन

केवल यीशु

यीशु कौन है ? बचपन मे उसने एक राजा को चौका दिया; किशोरवस्था मे उसने डॉक्टरो को हैरान कर दिया; बडा होने पर उसने प्रकृती के नियमो को खारीज किया . वह पानी पर चला, उसने समुद्र को चुप कराया, दवाइयो के बिना अनेको को चंगा किया . उसने कभी किताब नही लिखी फिर भी दुनिया भर के ग्रंथालये उसके बारे लिखी हुई कितावो से भरी है . उसने कभी गाना नही लिखा लेकिन उसके ऊपर इतने गाने लिखे गए जो दुनिया भर के गीतकार मिलकर भी नही लिख सकते . उसने कभी सेनाओ का नेतृत्त नही किया या सैनिको का मसुदा तैय्यार नही किया या उसने कभी गोली नही चलाई फिर भी उसके के पास सबसे अधिक कार्यकर्ता है . वह खगोल विज्ञान का सितारा है, भुगोल विज्ञान कि चट्टान, प्राणी विज्ञान की भेड और शेर है . महान पुरूष आए और चले गए लेकिन वह अभी भी जी रहा है . हेरोद उसे मार न सका, शैतान उसके साथ छेडखानी कर न सका, मृत्यू उसे नष्ट कर न सका, कबर उसे रोक न सकी.....वह है मेरा यीशु . .

दिन ः १

युहन्ना १ः १ से १४ पढिए

1 आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।

2 यही आदि में परमेश्वर के साथ था।

3 सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।

4 उस में जीवन था; और वह जीवन मुनष्यों की ज्योति थी।

5 और ज्योति अन्धकार में चमकती है; और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया।

6 एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से आ उपस्थित हुआ जिस का नाम यूहन्ना था।

7 यह गवाही देने आया, कि ज्योति की गवाही दे, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएं।

8 वह आप तो वह ज्योति न था, परन्तु उस ज्योति की गवाही देने के लिये आया था।

9 सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी।

10 वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहिचाना।

11 वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।

12 परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।

13 वे न तो लोहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।

14 और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।

हम हमारे नए साल कि शुरूवात इस चौका देने वाले साधारण सच से करेंगे जो इस वचन मे लिखा है ः वचन देहधारी हुआ और उसने हमारे वीच मे डेरा किया . वचन मे यह विनाशक एक वहोत आश्र्च यजनक वयान है .

वायवल कमेंटेटर विल्यम वारक्ले ने कहा कि 'यह नए नियम का सवसे महान वचन है' .

'वचन देहधारी हुआ' यह वाक्य ख्रिश्चन धर्म को संसार के सब धर्मो से अलग करता है . यीशु मसीह का सुसमाचार केवल हमे संवोधन नही करता कि हमे क्या करना चाहिए लेकिन यह एक प्रदर्शन है जो हमे दिखाता है कि परमेश्वर ने क्या किया है .

यह सच आज हमे चकित करे ः कि 'एक जो अनंत है परिमित वन गया . परमेश्वर मानव वन गया और हमारे वीच डेरा किया' . यीशु स्वर्ग और नर्क के वीच कि एक कडी है (जैसे याकुव उत्पत्ती २८ः१२ मे दृष्टांत मे एक सीढी जो पृथ्वी से स्वर्ग तक पहुचती है)

<u>कार्य</u> ः यीशु के पृथ्वी के पर आने के वारे मे किसिको वताइए .

दिन ः २

मत्ती ९ ः १४ से १७

14 तब यूहन्ना के चेलों ने उसके पास आकर कहा; क्या कारण है कि हम और फरीसी इतना उपवास करते हैं, पर तेरे चेले उपवास नहीं करते?

15 यीशु ने उन से कहा; क्या बराती, जब तक दुल्हा उन के साथ है शोक कर सकते हैं? पर वे दिन आएंगे कि दूल्हा उन से अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास करेंगे।
16 को रे कपड़े का पैबन्द पुराने पहिरावन पर कोई नहीं लगाता, क्योंकि वह पैबन्द पहिरावन से और कुछ खींच लेता है, और वह अधिक फट जाता है।
17 और नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरते हैं; क्योंकि ऐसा करने से मशकें फट जाती हैं, और दाखरस बह जाता है और मशकें नाश हो जाती हैं, परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरते हैं और वह दोनों बची रहती हैं।

नए नियम पढकर एक अदभुत सच्चाई पता चलती है कि यीशु मसीह संसार मे आने से भाषा को अर्थ समजने का नया वजन सहना पढा . जव पौलुस रोमियो ८ः३७ मे कहता है कि 'हम उसके द्वारा विजेता है जिसने हम से प्रेम किया' और फिर यह कहते है कि 'हम विजेता से भी अधिक हैं' तो यह एक वढाकर कहा हुआ वाक्य है . . नही . . यह एक वास्तविकता है .

परमेश्वर के अदभुत उध्दार के नए दाखरस को मिनिस्ट्री और वास्ताविकता के नए मशको मे डाला गया . वास्तविकता जो हमारे लिए नयी है . विजेता होना एक बात है और विजेता से **अधिक** होना अलग बात है .

अधिक यह शब्द हमे हमारे सामने रखे हुए असिमित धार्मिकता मे बढने के लिए उपयोगी संसाधनो और विकास को दिखाता है . मसीह मे हम जीवीत रहने से भी अधिक करते है . हम कामयाब होते है और फल लाते है .

कार्य ः आइए हम यीशु के असिमित सामर्थ को समझने के लिए उपवास करे और यह जाने मसीह मे और मसीह के लिए हम क्या कर सकते है .

दिन ः ३

१ युहन्ना १ः ८ से १०

8 यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं: और हम में सत्य नहीं।

9 यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।

10 यदि कहें कि हम ने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है॥

विजेता से बढकर होना हमे पाप या गलति करने से पुर्ण स्वतंत्रता नही देता . वचन यह बताता है 'कि यदि हम अपने पापो को मान ले तो हम क्षमा पाते है और शुध्द बन जाते है' . हमे हर दिन परमेश्वर मे पुर्ण सर्मिपित जीवन जीना है लेकिन यह नही भुलना नही कि अगर हम गलति करते है तो क्षमा पाने का रास्ता भी दिया गया है . शैतान के साथ हम एक लडाइ हार सकते है, लेकिन पुरी लडाई खो नही सकते, या लडाई खो सकते है लेकिन युध्द हार नही सकते .

जब एक भेड और सुअर किचड मे गिरते है तो उनमे एक अंतर होता है, भेड मिमियाहट करते करते

उसमे से वाहर निकलता ह, लेकिन सुअर किचड को ही प्यार करता है और उसीमे हमेशा रहता है . जव हम पाप मे गिरते है तो क्या हम उसे छुपाकर उसी मे और डुवते है या हम पापो को कवुल करके चरवाह को पुकारते है ?

कार्य ः कलिसिया मे अपने दोस्त के साथ अपने अंधकार (पापो)को कवुल करे ताकि यीशु आपको दुवारा ज्योती मे ला सके .

दिन ः ४

१ युहन्ना ५ः १ से ५

1 जिसका यह विश्वास है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है और जो कोई उत्पन्न करने वाले से प्रेम रखता है, वह उस से भी प्रेम रखता है, जो उस से उत्पन्न हुआ है।
2 जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और उस की आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम जानते हैं, कि परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम रखते हैं।
3 और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं को मानें; और उस की आज्ञाएं कठिन नहीं।
4 क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है।
5 संसार पर जय पाने वाला कौन है केवल वह जिस का यह विश्वास है, कि यीशु, परमेश्वर का पुत्र है।

हममे से कइ लोग अपने जीवन मे यीशु को कई क्षेत्रो मे कार्य करने देते है लेकिन कई क्षेत्रो मे कार्य करने से रोकते है . यह वात हमारे जीवन मे दो चेहरे वाला जीवन को वढावा देती है . उसके कारण हमारे अंदर विभाजन होता है .

१९२१ से १९३७ के वीच अंग्रेज और भारत के लोगो ने मिलकर सरकार वनाई थी . इस प्रकार के सरकार को दो व्यक्तियो द्वारा चलाई जाने वाली सरकार कहा जाती है . यह प्रणाली सफल नही रही और धार्मिकता मे भी ऐसी प्रणाली विफल होती है .

इसका उत्तर वचन ५ मे है कि 'अगर हम यीशु पर यह विश्वास करते है कि वह परमेश्वर का पुत्र है तो हम संसार पर विजय पाएंगे'. हम दो स्वामीयो कि सेवा नही कर सकते. अगर हमारे मन मे विभाजन है तो कोई भी आनंद से जीवन नही वीता सकता. हमारे अंदर एकता होना जरूरी है नही तो हम धार्मिकता मे गिर जाएंगे.

अगर मसीह को हमारा पुरा जीवन नही सोपेंगे और हमारे जीवन का पुरा नियंत्रण उसको नही देंगे तो हम हमेशा तनाव मे जीवन जीएंगे.

स्वाभाविक रूप से हम अपने आप पर केंद्रीत होते है और हम सोचते है कि हम यीशु के महिमा के लिए जीते है लेकिन वास्तव मे हम अपनी महीमा करते है.

कार्य ः एक वार फिर से यीशु को अपना प्रभु वनाए.

प्रार्थना किजीए और यीशु को अपना राजा वनाकर अपने जीवन के अलग अलग देवताओ को वाहर निकालिए. (उन चिजो को जिनको हम यीशु से ज्यादा स्थान देते है)

दिन ५

रोमियो ७ ः ७ से २५

7 तो हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप है? कदापि नहीं! वरन बिना व्यवस्था के मैं पाप को नहीं पहिचानता: व्यवस्था यदि न कहती, कि लालच मत कर तो मैं लालच को न जानता।
8 परन्तु पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझ में सब प्रकार का लालच उत्पन्न किया, क्योंकि बिना व्यवस्था पाप मुर्दा है।
9 मैं तो व्यवस्था बिना पहिले जीवित था, परन्तु जब आज्ञा आई, तो पाप जी गया, और मैं मर गया।
10 और वही आज्ञा जो जीवन के लिये थी; मेरे लिये मृत्यु का कारण ठहरी।
11 क्योंकि पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझे बहकाया, और उसी के द्वारा मुझे मार भी डाला।
12 इसलिये व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा भी ठीक और अच्छी है।
13 तो क्या वह जो अच्छी थी, मेरे लिये मृत्यु ठहरी? कदापि नहीं! परन्तु पाप उस अच्छी वस्तु के द्वारा मेरे लिये मृत्यु का उत्पन्न करने वाला हुआ कि उसका पाप होना प्रगट हो, और आज्ञा के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे।

14 क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है, परन्तु मैं शरीरिक और पाप के हाथ बिका हुआ हूं।

15 और जो मैं करता हूं, उस को नहीं जानता, क्योंकि जो मैं चाहता हूं, वह नहीं किया करता, परन्तु जिस से मुझे घृणा आती है, वही करता हूं।

16 और यदि, जो मैं नहीं चाहता वही करता हूं, तो मैं मान लेता हूं, कि व्यवस्था भली है।

17 तो ऐसी दशा में उसका करने वाला मैं नहीं, वरन पाप है, जो मुझ में बसा हुआ है।

18 क्योंकि मैं जानता हूं, कि मुझ में अर्थात मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती, इच्छा तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते।

19 क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूं, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता वही किया करता हूं।

20 परन्तु यदि मैं वही करता हूं, जिस की इच्छा नहीं करता, तो उसका करने वाला मैं न रहा, परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ है।

21 सो मैं यह व्यवस्था पाता हूं, कि जब भलाई करने की इच्छा करता हूं, तो बुराई मेरे पास आती है।

22 क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूं।

23 परन्तु मुझे अपने अंगो में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है।

24 मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?

25 मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं: निदान मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का सेवन करता हूं॥

हमारे जीवन के हरएक क्षेत्रो को हम यीशु को देने से हम क्यो संघर्ष करते है ? इसलिए कि हम अपना जीवन खुदके नियंत्रण मे रखना चाहते है . आदम और हवा ने एदेन वाग मे अपने उपर निर्भर रहने का पाप किया था .

हम अपने जीवन को खुद नियंत्रण करना चाहते है और जब यीशु हमारे सामने खडे होकर हमारे जीवन का नियंत्रण मांगते है तो हमारे अंदर लाचार होने कि भावना आ जाती है . हमारा स्वभाव इस भावना को पसंद नही करता और हम समझौता करते है . एक शांतीभरा जीवन वह है जब हम अपना जीवन यीशु को पुरी तरह से समर्पित करते है . हम स्वयं केंद्रित जीवन छोडकर यीशु पर केंद्रित जीवन जीने लगते है . अगर हम इस बात पर विश्वास नही करते कि यीशु ही हमारे लिए काफी है तो हम मुर्ख है .

कार्य : यीशु के लिए कुछ त्यागने का निर्णय करे .

दिन ६

उत्पत्ती ३ ः १ से १९

1 यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उसने स्त्री से कहा, क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस बाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?

2 स्त्री ने सर्प से कहा, इस बाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं।

3 पर जो वृक्ष बाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।

4 तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे,

5 वरन परमेश्वर आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।

6 सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उस में से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया।

7 तब उन दोनों की आंखे खुल गई, और उन को मालूम हुआ कि वे नंगे है; सो उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिये।

8 तब यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठंडे समय बाटिका में फिरता था उसका शब्द उन को सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी बाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए।

9 तब यहोवा परमेश्वर ने पुकार कर आदम से पूछा, तू कहां है?

10 उसने कहा, मैं तेरा शब्द बारी में सुन कर डर गया क्योंकि मैं नंगा था; इसलिये छिप गया।

11 उसने कहा, किस ने तुझे चिताया कि तू नंगा है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे बर्जा था, क्या तू ने उसका फल खाया है?

12 आदम ने कहा जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैं ने खाया।

13 तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, तू ने यह क्या किया है? स्त्री ने कहा, सर्प ने मुझे बहका दिया तब मैं ने खाया।

14 तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा, तू ने जो यह किया है इसलिये तू सब घरेलू पशुओं, और सब बनैले पशुओं से अधिक शापित है; तू पेट के बल चला करेगा, और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा:

15 और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करुंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।

16 फिर स्त्री से उसने कहा, मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दु:ख को बहुत बढ़ाऊंगा; तू पीड़ित हो कर बालक उत्पन्न करेगी; और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।

17 और आदम से उसने कहा, तू ने जो अपनी पत्नी की बात सुनी, और जिस वृक्ष के फल के विषय मैं ने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना उसको तू ने खाया है, इसलिये भूमि तेरे कारण शापित है: तू उसकी उपज जीवन भर दु:ख के साथ खाया करेगा:

18 और वह तेरे लिये कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा ;

19 और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा; क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।

हम सब के जीवन मे डर होता है .हमारे डर कि जड हमारे अंदरूनी लडाई मे है .हमारे डर का इलाज हमारे अंदर बनाए गए उस व्यक्ती मे छुपा है जो मसीह द्वारा बनाया जाता है .सिध्द प्रेम डर को निकाल देता है और असिध्द प्रेम हमारे दिलो मे डर को खिचता है .

आदम पाप करने से पहले एक परिपुर्ण व्यक्ती था जिसने परमेश्वर के प्रेम का पुरा आनंद लेता था .पाप करके उसने उस प्रेम के बीच मे एक दरार डाली और पहली चीज जो उसके जीवन मे आइ वो है ः डर .उसके शब्दो पर ध्यान दिजीए . "मै डर गया था" .जब डर अंदर आता है तो प्रेम बाहर जाता है .जब प्रेम अंदर आता है तो डर बाहर जाता है .

डर से छुटकारा पाने के लिए हमे प्रेम का जरूरत है .यह प्रेम एक ही व्यक्ती मे बसा है ःयीशु .२कुरूंथियो ५ः१४ कहता है 'कि मसीह का प्रेम हमे विवश करता है' मतलब प्रेम की खाई डालता है .हमारे पुरे दिल मे बस मसीह के प्रेम का ही जुनून होना चाहिए .इसका अर्थ यह नही कि हम दुसरो से प्रेम न करे .लेकिन बाकि चीजो का प्रेम दुसरे स्थान पर और मसीह के लिए प्रेम हमेशा पहले होगा .जब हम मसीह को पहला प्रेम करेंगे तो दुसरो से बेहतरीन प्रेम कर सकते है .

कार्य ः पाच लोगो कलिसिया मे आने के लिए याद दिलाइए .

दिन ः ७

मत्ती १७ ः १ से १३

1 छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया।

2 और उनके साम्हने उसका रूपान्तर हुआ और उसका मुंह सूर्य की नाईं चमका और उसका वस्त्र ज्योति की नाईं उजला हो गया।

3 और देखो, मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए।

4 इस पर पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, हमारा यहां रहना अच्छा है; इच्छा हो तो यहां तीन मण्डप बनाऊं; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।

5 वह बोल ही रहा था, कि देखो, एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और देखो; उस बादल में से यह शब्द निकला, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं: इस की सुनो।

6 चेले यह सुनकर मुंह के बल गिर गए और अत्यन्त डर गए।

7 यीशु ने पास आकर उन्हें छूआ, और कहा, उठो; डरो मत।

8 तब उन्होंने अपनी आंखे उठाकर यीशु को छोड़ और किसी को न देखा।

9 जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तब यीशु ने उन्हें यह आज्ञा दी; कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से न जी उठे तब तक जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना।

10 और उसके चेलों ने उस से पूछा, फिर शास्त्री क्यों कहते हैं, कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है?

11 उस ने उत्तर दिया, कि एलिय्याह तो आएगा: और सब कुछ सुधारेगा।

12 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि एलिय्याह आ चुका; और उन्होंने उसे नहीं पहचाना; परन्तु जैसा चाहा वैसा ही उसके साथ किया: इसी रीति से मनुष्य का पुत्र भी उन के हाथ से दुख उठाएगा।

13 तब चेलों ने समझा कि उस ने हम से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विषय में कहा है।

यहा पर हम यीशु का परिवर्तन देखते है . यहा पर पतरस अपनी वफादारी दिखाता है और मुसा जिसने नियमशास्त्र दिया, एलिया जो एक नवी था, और यीशु जिसने नया प्रकाशन लाया . पतरस तीनो को

एक ही स्तर मे देखना चाहता था . वचन ४ मे उसने यीशु को कहा कि 'वह तीन तंबु बनायगा . एक यीशु के लिए . एक मुसा और एक एलिया के लिए . '

पतरस यीशु के सर्वोचता को समझ नही पाया . पतरस जब यह बोल रहा था तो एक बादल उनके ऊपर आया और परमेश्वर बोले 'यह मेरा पुत्र है जिससे मै प्रेम करता हू और उसकि सुनो . ' परमेश्वर ने उनको यह बताया कि यीशु मुसा या एलिया जैसा नही लेकिन उनसे बडा है .

इसपर उनकि प्रतिक्रिया यह थी वो सब जमिन पर गिर पडे और डर गए . परमेश्वर कि आवाज सुनकर वे डर गए और यीशु कि परिपुर्णता नही समझ पाए .

कार्य ः कुछ ऐसा करो जो यीशु करेंगे ः (प्रचार,किसीको प्रोत्साहन करो, या गरीबो को मदत करो)

यीशु कि आवाज सुनो .

दिन ८

कुलुसियो ३ः १ से १७

1 सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है।

2 पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ।

3 क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।

4 जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे।

5 इसलिये अपने उन अंगो को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्ति पूजा के बराबर है।

6 इन ही के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा न मानने वालों पर पड़ता है।

7 और तुम भी, जब इन बुराइयों में जीवन बिताते थे, तो इन्हीं के अनुसार चलते थे।

8 पर अब तुम भी इन सब को अर्थात क्रोध, रोष, बैरभाव, निन्दा, और मुंह से गालियां बकना ये सब बातें छोड़ दो।

9 एक दूसरे से झूठ मत बोलो क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है।

10 और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है।

11 उस में न तो यूनानी रहा, न यहूदी, न खतना, न खतनारिहत, न जंगली, न स्कूती, न दास और न स्वतंत्र: केवल मसीह सब कुछ और सब में है॥

12 इसलिये परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करूणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो।

13 और यदि किसी को किसी पर दोष देने को कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो।

हमे समझना है यीशु के द्वारा हमारे पास एक अदभुत सामर्थ है . जब हमारे जीवन मे सबकुछ हमारे इच्छा से होता है, सब परिस्थीथी बड़ीया है तो हम हमारा जवन अच्छा चलता है . लेकिन जीवन हमेशा ऐसा नही होता . जब हम अलग अलग निराशा लाने वाली कठीनाइयिओ का सामना करते है और वो समय हमारी सच्ची परीक्षा होती है .

जैसे तीन प्रकार की नाव होती है वैसे तीन प्रकार के मसीह जीवन होते है ः हात से चलनी वाली नाव, पतवारे से चलनेवाली नाव, और इंजिन से चलने वाली नाव . हात से चलती नाव जैसे मसीही उपर से तो मसीही नजर आते है लेकिन परीक्षा मे वे खुद पे निर्भर होते है और अपने जीवन खुद ही चलाते है . पतवारी नाव जैसे मसीही वे होते है जो परिस्थियो के अनुसार इधर उधर चलाए जाते है, परिस्थितीया उनको चलाती है . इंजिन कि नाव जैसे वो मसीही होते है जो कोई भी परीस्थितीयो मे आगे बढते रहते है . वे खुद पे या परिस्थितीयो पे निर्भर नही होते . वे यीशु पे निर्भर होते है .

आप किस प्रकार के मसीही है ?

कार्य ः किसके के साथ वचन बाटीए और उनको यीशु पर निर्भर रहने को सिखाइए .

दिन ९

मत्ती ३ ः १ से १७

1 उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार करने लगा।
कि

2 मन फिराओ; क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।

3 यह वही है जिस की चर्चा यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा की गई कि जंगल में एक
पुकारने वाले का शब्द हो रहा है, कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, उस की सड़कें सीधी करो।

4 यह यूहन्ना ऊंट के रोम का वस्त्र पहिने था, और अपनी कमर में चमड़े का पटुका बान्धे हुए
था, और उसका भोजन टिड्डियां और बनमधु था।

5 तब यरूशलेम के और सारे यहूदिया के, और यरदन के आस पास के सारे देश के लोग उसके
पास निकल आए।

6 और अपने अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया।

7 जब उस ने बहुतेरे फरीसियों और सदूकियों को बपतिस्मा के लिये अपने पास आते देखा, तो
उन से कहा, कि हे सांप के बच्चों तुम्हें किस ने जता दिया, कि आने वाले क्रोध से भागो?

8 सो मन फिराव के योग्य फल लाओ।

9 और अपने अपने मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता इब्राहीम है; क्योंकि मैं तुम से कहता
हूं, कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है।

10 और अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता,
वह काटा और आग में झोंका जाता है।

11 मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह
मुझ से शक्तिशाली है; मैं उस की जूती उठाने के योग्य नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग
से बपतिस्मा देगा।

12 उसका सूप उस के हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और
अपने गेहूं को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की
नहीं॥

13 उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास उस से बपतिस्मा लेने आया।

14 परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, कि मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यक्ता है, और तू मेरे पास आया है?

15 यीशु ने उस को यह उत्तर दिया, कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिर्कता को पूरा करना उचित है, तब उस ने उस की बात मान ली।

16 और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया; और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा।

17 और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं॥

कइ वार हम एक अच्छी जिंदगी जिने के लिए कडी मेहनत करते है . ऐसा लगता है कि हम एक तनावपुर्ण मसीही जीवन जी रहे है . ऐसे जीवन से हम दुसरो को यीशु के पास ला नही पाते .

लोहे के पत्रे को वनाने मे कि प्रकिया मे उसे वहुत तप्ती हुई आग मे गरम किया जाता है . ऐसा करने से उस लोहे के पत्रे को जैसा चाहे मोडा जा सकता है . और जव पत्रा मोडा जाता है तो वह तुटता नही . वचन यह वताता है युशु हमे पानी से नही लेकिन आग से वप्तिस्मा देगा .

क्या इसीकी हमे जरूरत नही ? वो आग का वप्तिस्मा जो हमे पिघला दे और हमारे आत्मा ऐसे काम करे कि हम कभी न टुटे . जव यीशु हमारे दिलो मे होगा तो सव तनाव खत्म होता है और हमारे अंदर शांती होगी .

कार्य ः किसिके साथ विश्वास वाटिए ताकि वे भी यीशु के शांती का अनुभव करे .

दिन १०

१ ला कुरूंथियो १५ ः ३५ से ५८

35 अब कोई यह कहेगा, कि मुर्दे किस रीति से जी उठते हैं, और कैसी देह के साथ आते हैं?
36 हे निर्बुद्धि, जो कुछ तु बोता है, जब तक वह न मरे जिलाया नहीं जाता।
37 ओर जो तू बोता है, यह वह देह नहीं जो उत्पन्न होनेवाली है, परन्तु निरा दाना है, चाहे गेहूं का, चाहे किसी और अनाज का।
38 परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उस को देह देता है; और हर एक बीज को उस की विशेष देह।
39 सब शरीर एक सरीखे नहीं, परन्तु मनुष्यों का शरीर और है, पशुओं का शरीर और है; पक्षियों का शरीर और है; मछिलयों का शरीर और है।
40 स्वर्गीय देह है, और पार्थिव देह भी है: परन्तु स्वर्गीय देहों का तेज और है, और पार्थिव का और।
41 सूर्य का तेज और है, चान्द का तेज और है, और तारागणों का तेज और है, (क्योंकि एक तारे से दूसरे तारे के तेज में अन्तर है)।
42 मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है।
43 वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है; और सामर्थ के साथ जी उठता है।
44 स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है: जब कि स्वाभाविक देह है, तो आत्मिक देह भी है।
45 ऐसा ही लिखा भी है, कि प्रथम मनुष्य, अर्थात आदम, जीवित प्राणी बना और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना।
46 परन्तु पहिले आत्मिक न था, पर स्वाभाविक था, इस के बाद आत्मिक हुआ।
47 प्रथम मनुष्य धरती से अर्थात मिट्टी का था; दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है।
48 जैसा वह मिट्टी का था वैसे ही और मिट्टी के हैं; और जैसा वह स्वर्गीय है, वैसे ही और भी स्वर्गीय हैं।
49 और जैसे हम ने उसका रूप जो मिट्टी का था धारण किया वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे॥
50 हे भाइयों, मैं यह कहता हूं कि मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न विनाश अविनाशी का अधिकारी हो सकता है।

51 देखे, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे।

52 और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जांएगे, और हम बदल जाएंगे।

53 क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले।

54 और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तक वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया।

55 हे मृत्यु तेरी जय कहां रही?

56 हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा? मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है।

57 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।

58 सो हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है॥

एक सफल जीवन जीने का रास्ता है यह है कि, '**मसीह मे विजेता होने के लिए हमे मसीह को हमारे जीवन मे कार्य करने देना हैं**'. सफल मसीही जीवन जीने के लिए हमे हमारा मन, भावना और इच्छाओ को यीशु के कब्जे देना है. हम जंगली और अनियंत्रित घोडे के समान अपनी लगाम यीशु के हाथ मे देने के लिए तैयार होना है.

आफ्रीकी जनजात मे ऐसा विश्वास है 'जब एक आदमी दुसरे पर विजय पाता है तो जो विजयी होता है उसको जिसके उपर विजय पाया उसकी भी ताकत मिल जाती हैं'. मुझे इसपर विश्वास नही परंतु धार्मिक जीवन मे ऐसा ही होता है. 'जब हमारे जीवन हम मसीह को विजयी होने देते है तो उसका सामर्थ हमे मिलता है'. और हम हर लड़ाई का सामना करने के लिए तैयार होते है.

दुसरी बात यह है कि हम दुसरो को भी विजयी बनाते है.

कार्य ः अपने किसी कामजोरी अपने कैसे विजयी हुए यह किसी बताकर उनको मसीह मे भरोसा करने के लिए मदत किजिए.

दिन ११

युहन्ना १४ ः १ से १४

1 तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो।

2 मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं।

3 और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।

4 और जहां मैं जाता हूं तुम वहां का मार्ग जानते हो।

5 थोमा ने उस से कहा, हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू हां जाता है तो मार्ग कैसे जानें?

6 यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।

7 यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते, और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है।

8 फिलेप्पुस ने उस से कहा, हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे: यही हमारे लिये बहुत है।

9 यीशु ने उस से कहा; हे फिलेप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूं, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है: तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा।

10 क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं पिता में हूं, और पिता मुझ में हैं? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूं, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।

11 मेरी ही प्रतीति करो, कि मैं पिता में हूं; और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो।

12 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।

13 और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।

14 यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा।

यह सच है कि 'शव्द' एक दुसरे को जानने का एक सशक्त माध्यम है . फिर भी उससे हम परमेश्वर को पुरी तरह से शव्दो से बयान नही कर सकते . हम परमेशवर का ज्ञान, सामर्थ, नम्रता पुरी तरह से समझ नही सकते . लेकिन परमेश्वर चाहते है कि हम उसको समझे . उसकी इच्छा यह थी हम उसे समझे,

इसलिए उसने हमारे पास जीवन को भेजा . जो अदभुत है . ताकि हम उसको वेहतर रूप से गहराई से समझ सके .

दो हजार साल पहले स्वर्ग से जीवन हमारे वीच मे आया और उसने हमारे वीच निवास किया . तभी हमे प्रेम क्या है समझ आया जव हमने उसे यह कहते हुए सुना कि हे पिता इन्हे क्षमा करो क्योंकि वे नही जानते कि क्या कर रहे है(लुका २३ ः३४).इसलिए आज "परमेश्वर" इस शव्द के वारे मे सोचते है तो हमारे कल्पना पे निर्भर नही है . परमेश्वर के गुण यीशु के द्वारा प्रकट हुए . जैसे यीशु वचन ९ मे कहते है कि "जिसने पुत्र को देखा उसने परमेश्वर को देखा" . परमेश्वर के पास जाने का एक ही रास्ता है 'यीशु' .

कार्य ः परमेश्वर को यीशु के लिए धन्यवाद करे और जो खास जगह उसने विश्वासियो के लिए स्वर्ग मे वनाई है उसके लिए भी .

दिन १२

लुका १ ः ६७ से ८०

67 और उसका पिता जकरयाह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया, और भविष्यद्ववाणी करने लगा।

68 कि प्रभु इस्राएल का परमेश्वर धन्य हो, कि उस ने अपने लोगों पर दृष्टि की और उन का छुटकारा किया है।

69 और अपने सेवक दाऊद के घराने में हमारे लिये एक उद्धार का सींग निकाला।

70 जैसे उस ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा जो जगत के आदि से होते आए हैं, कहा था।

71 अर्थात हमारे शत्रुओं से, और हमारे सब बैरियों के हाथ से हमारा उद्धार किया है।

72 कि हमारे बाप-दादों पर दया करके अपनी पवित्र वाचा का स्मरण करे।

73 और वह शपथ जो उस ने हमारे पिता इब्राहीम से खाई थी।

74 कि वह हमें यह देगा, कि हम अपने शत्रुओं के हाथ से छुटकर।

75 उसके साम्हने पवित्रता और धार्मिकता से जीवन भर निडर रहकर उस की सेवा करते रहें।

76 और तू हे बालक, परमप्रधान का भविष्यद्वक्ता कहलाएगा, क्योंकि तू प्रभु के मार्ग तैयार करने के लिये उसके आगे आगे चलेगा,

77 कि उसके लोगों को उद्धार का ज्ञान दे, जो उन के पापों की क्षमा से प्राप्त होता है।

78 यह हमारे परमेश्वर की उसी बड़ी करूणा से होगा; जिस के कारण ऊपर से हम पर भोर का प्रकाश उदय होगा।

79 कि अन्धकार और मृत्यु की छाया में बैठने वालों को ज्योति दे, और हमारे पांवों को कुशल के मार्ग में सीधे चलाए॥

80 और वह बालक बढ़ता और आत्मा में बलवन्त होता गया, और इस्राएल पर प्रगट होने के दिन तक जंगलों में रहा।

वचन ६८ बताता है कि यीशु अपने लोगो को छुडाने आए . युहन्ना १ ः १४ मे बताया कि उसने हमारे बीच डेरा किया . इन विचारो के पिछे मकसद यह है कि कोई हमारे बीच मे तंबू डालकर रहता है . छाहे तो यीशु हमारे बीच से एक बादल से गुजरते थे और जिसे चाहे उसे चुनते थे . लेकिन यीशु ने पृथ्वी पर जन्म लेने का निर्णय किया . गरीबी, परीक्षाओ और परशानीयो मे रहा . यीशु ने चरनी से लेकर कब्र तक इस धरती पर ३३ साल गुजारे . संसार कि नजर से ये ज्यास समय नही है, लेकिन जीवन इसपर निर्भर नही करता कि आप कितने समय के लिए जिते है, बल्की इसके उपर कि आप उन समय मे क्या करते है .

यीशु ने उसी परिस्थितीयो मे परमेश्वर के चरित्र को प्रकट किया जहा हमारा चरित्र बनता है . उसमे और हममे यही फरक है कि उसने हमे यह दिखाया कि कैसे हर समय परमेश्वर पर निर्भर रहना है . वो हमारे बीच मे रहा और हमे जीना सिखाया .

कार्य ः किसे के साथ पवित्रशास्त्र का अध्ययन किजीए और उन्हे सिखााए कि यीशु ने हमारे लिए क्या किया .

दिन १३

इब्रानी ४ ः १ से १६

1 इसलिये जब कि उसके विश्राम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा अब तक है, तो हमें डरना चाहिए; ऐसा ने हो, कि तुम में से कोई जन उस से रहित जान पड़े।

2 क्योंकि हमें उन्हीं की नाईं सुसमाचार सुनाया गया है, पर सुने हुए वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ; क्योंकि सुनने वालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा।

3 और हम जिन्हों ने विश्वास किया है, उस विश्राम में प्रवेश करते हैं; जैसा उस ने कहा, कि मैं ने अपने क्रोध में शपथ खाई, कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाएंगे, यद्यपि जगत की उत्पत्ति के समय से उसके काम पूरे हो चुके थे।

4 क्योंकि सातवें दिन के विषय में उस ने कहीं यों कहा है, कि परमेश्वर ने सातवें दिन अपने सब कामों को निपटा कर के विश्राम किया।

5 और इस जगह फिर यह कहता है, कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश न करने पाएंगे।

6 तो जब यह बात बाकी है कि कितने और हैं जो उस विश्राम में प्रवेश करें, और जिन्हें उसका सुसमाचार पहिले सुनाया गया, उन्होंने आज्ञा न मानने के कारण उस में प्रवेश न किया।
7 तो फिर वह किसी विशेष दिन को ठहराकर इतने दिन के बाद दाऊद की पुस्तक में उसे आज का दिन कहता है, जैसे पहिले कहा गया, कि यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करो।
8 और यदि यहोशू उन्हें विश्राम में प्रवेश कर लेता, तो उसके बाद दूसरे दिन की चर्चा न होती।
9 सो जान लो कि परमेश्वर के लोगों के लिये सब्त का विश्राम बाकी है।
10 क्योंकि जिस ने उसके विश्राम में प्रवेश किया है, उस ने भी परमेश्वर की नाईं अपने कामों को पूरा करके विश्राम किया है।
11 सो हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें, ऐसा न हो, कि कोई जन उन की नाईं आज्ञा न मान कर गिर पड़े।
12 क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।
13 और सृष्टि की कोई वस्तु उस से छिपी नहीं है वरन जिस से हमें काम है, उस की आंखों के साम्हने सब वस्तुएं खुली और बेपरदा हैं॥
14 सो जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात परमेश्वर का पुत्र यीशु; तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामें रहे।
15 क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।
16 इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे॥

मत्ती ४ मे शैतान ने यीशु कि परिक्षा ली . पहली परिक्षा थी कि हमसे अलग न जिए . जैसा हम रोटी से जिते है वो भी जीए . दुसरी परिक्षा हमसे ऊपर जिए . . अपने आप को उंचाइ से फेको और स्वर्गदुत तुंम्हारी रक्षा करेगा . तिसरी जैसे हम जिते वैसे जिने दो . शैतान कि आराधना करो, उसको नमन करो ताकि संसारिक चीजे पा सको .
यीशु ने सभी परिक्षा को ठुकराया और वचन से चुनौती दिया . एक युध्द के दरम्यान एक सैनिक ने एक भुकी लडकी को देखकर उसे खाना देना चाहा . लेकिन लडकी ने यह कहकर उसे खाना न चाहा कि 'उसमे जहर हैं' . सैनिक ने कहा कि वह पहले उसे खाएगा और फिर उसे देगा, तो लडकि मान

गयी . इब्रानी २:९ मे लिखा है कि 'यीशुने हमारे लिए मृत्यू को चखा' . लेकिन यह भी सच है कि उसने हमारे लिए जीवन को भी चखा .

सच मे कि उसने हमारे लिए जीवन को चखा . उसने हमे ऐसा कुछ कहने को नही कहा जिसका उसने सामना न किया . जैसी हमारी परिक्षा होती है उसकी भी हुई . फिर भी उसने कोई पाप नही किया .

कार्य : अपने परिक्षाओ के बारे मे किसीसे मिलकर बात कर प्रार्थना करे और योजना करे कि कैसे आप उस परिक्षापर विजय पा सकते है .

दिन १४

इब्रानी १२ : १४ से २९

14 सब से मेल मिलाप रखने, और उस पवित्रता के खोजी हो जिस के बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा।

15 और ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूट कर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं।

16 ऐसा न हो, कि कोई जन व्यभिचारी, कष्ट ऐसाव की नाईं अधर्मी हो, जिस न एक बार के भोजन के बदले अपने पहिलौठे होने का पद बेच डाला।

17 तुम जानते तो हो, कि बाद को जब उस ने आशीष पानी चाही, तो अयोग्य गिना गया, और आंसू बहा बहाकर खोजने पर भी मन फिराव का अवसर उसे न मिला॥

18 तुम तो उस पहाड़ के पास जो छूआ जा सकता था और आग से प्रज्वलित था, और काली घटा, और अन्धेरा, और आन्धी के पास।

19 और तुरही की ध्वनि, और बोलने वाले के ऐसे शब्द के पास नहीं आए, जिस के सुनने वालों ने बिनती की, कि अब हम से और बातें न की जाएं।

20 क्योंकि वे उस आज्ञा को न सह सके, कि यदि कोई पशु भी पहाड़ को छूए, तो पत्थरवाह किया जाए।

21 और वह दर्शन ऐसा डरावना था, कि मूसा ने कहा; मैं बहुत डरता और कांपता हूं।

22 पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास।

23 और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया जिन के नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं: और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं।

24 और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव के उस लोहू के पास आए हो, जो हाबिल के लोहू से उत्तम बातें कहता है।

25 सावधान रहो, और उस कहने वाले से मुंह न फेरो, क्योंकि वे लोग जब पृथ्वी पर के चितावनी देने वाले से मुंह मोड़ कर न बच सके, तो हम स्वर्ग पर से चितावनी करने वाले से मुंह मोड़ कर क्योंकर बच सकेंगे?
26 उस समय तो उसके शब्द ने पृथ्वी को हिला दिया पर अब उस ने यह प्रतिज्ञा की है, कि एक बार फिर मैं केवल पृथ्वी को नहीं, वरन आकाश को भी हिला दूंगा।
27 और यह वाक्य 'एक बार फिर' इस बात को प्रगट करता है, कि जो वस्तुएं हिलाई जाती हैं, वे सृजी हुई वस्तुएं होने के कारण टल जाएंगी; ताकि जो वस्तुएं हिलाई नहीं जातीं, वे अटल बनी रहें।
28 इस कारण हम इस राज्य को पाकर जो हिलने का नहीं, उस अनुग्रह को हाथ से न जाने दें, जिस के द्वारा हम भक्ति, और भय सहित, परमेश्वर की ऐसी आराधना कर सकते हैं जिस से वह प्रसन्न होता है।
29 क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है॥

अपने आप से सवाल करे मेरे जीवन कि मजबुत पकड क्या है ? मेरे गहरे और मजबुत संकल्प है क्या है जो मै पकडे रहा हू ? अगर हम एक न डगमगाने वाले राज्य के वारिस है तो क्यों आसानी से डगमगाते है? हमारे आजूबाजू मे लोग शक्ति, अभिमान और सामाजिक स्थान पर अपना जीवन बना रहे है जो कभी भी गिर सकता है .
इतिहास मे कई राज्य यह समझकर बनाए गए कि वे हजारो साल टिकेंगे .कहा है वो राज्य ? क्या हमारा जीवन हम परमेश्वर के संकल्पो के चट्टान पर बांध रहे है, या संसार के विचारो के रेती पर जो एक दिन गिरेगा ?
कार्य ःउन चीजो कि सुचि बनाइए जिस पर हम विश्वास करते है और उससे मिलते वचन ढुंडिए .

दिन १५

1 थिस्सलुनीकियों ५ः १२ . २८

12 और हे भाइयों, हम तुम से बिनती करते हैं, कि जो तुम में परिश्रम करते हैं, और प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं, और तुम्हें शिक्षा देते हैं, उन्हें मानो।
13 और उन के काम के कारण प्रेम के साथ उन को बहुत ही आदर के योग्य समझो: आपस में मेल-मिलाप से रहो।

14 और हे भाइयों, हम तुम्हें समझाते हैं, कि जो ठीक चाल नहीं चलते, उन को समझाओ, कायरों को ढाढ़स दो, निर्बलों को संभालो, सब की ओर सहनशीलता दिखाओ।

15 सावधान! कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे; पर सदा भलाई करने पर तत्पर रहो आपस में और सब से भी भलाई ही की चेष्टा करो।

16 सदा आनन्दित रहो।

17 निरन्तर प्रार्थना मे लगे रहो।

18 हर बात में धन्यवाद करो: क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है।

19 आत्मा को न बुझाओ।

20 भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो।

21 सब बातों को परखो: जो अच्छी है उसे पकड़े रहो।

22 सब प्रकार की बुराई से बचे रहो॥

23 शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।

24 तुम्हारा बुलाने वाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा॥

25 हे भाइयों, हमारे लिये प्रार्थना करो॥

26 सब भाइयों को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो।

27 मैं तुम्हें प्रभु की शपथ देता हूं, कि यह पत्री सब भाइयों को पढ़कर सुनाई जाए॥

28 हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे॥

एक क्षेत्र जो हम सब को दोषी महसुस करता है, वो यह है कि जब कोई हमे हमारे प्रार्थना के बारे मे पुछते है . हमारी प्रार्थना के कमीयो के कारण हम सब को बुरा लगता है . हम अपने आप को कम पाते है . जब पौलुस हमे वचन १७मे बताता है कि "निरंतर प्रार्थना करो" .

यह जरूरी है कि हम हमारे प्रार्थना मे बढते रहे . हमे दुसरो से जरूर सिखना है लेकिन हमारा हर एक का परमेश्वर के साथ रिश्ता व्यक्तीगत होना चाहिए . जब हम नए मसीही बने तो हमे प्रार्थना करना सिखाया गया था . लेकिन जैसे हम विश्वास मे मजबुत हो रहे है तो हमे हमारे निजी प्रार्थना जीवन मे संतोष पाना है . मरकुस के सुसमाचार मे लिखा है यीशु भोर होने से पहले एकांत स्थान मे प्रार्थना करने को गए . लुका मे लिखा है कि यीशु अकेले मे प्रार्थना करने गए .

कई बार हम किसके प्रार्थना के बारेमे पढकर प्रोस्थाहन पाते है और उनसे तुलना करके अपने आप को निराश पाते है . लेकिन आपके जैसा प्रार्थना आप ही कर सकते है और कोई नही .

कार्य ः योजना बनाइए कि आप कैसे अपने प्रार्थना मे और बढिया कर सकते है . जैसे ज्यादा समय प्रार्थना, प्रार्थना कि सुचि, परमेश्वर कि ज्यादा स्तुती .

दिन १६

निर्गमन ३३ ः ११ से २३

11 और यहोवा मूसा से इस प्रकार आम्हने-साम्हने बातें करता था, जिस प्रकार कोई अपने भाई से बातें करे। और मूसा तो छावनी में फिर आता था, पर यहोशू नाम एक जवान, जो नून का पुत्र और मूसा का टहलुआ था, वह तम्बू में से न निकलता था॥

12 और मूसा ने यहोवा से कहा, सुन तू मुझ से कहता है, कि इन लोगों को ले चल; परन्तु यह नहीं बताया कि तू मेरे संग किस को भेजेगा। तौभी तू ने कहा है, कि तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है, और तुझ पर मेरे अनुग्रह की दृष्टि है।

13 और अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, तो मुझे अपनी गति समझा दे, जिस से जब मैं तेरा ज्ञान पाऊं तब तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे। फिर इसकी भी सुधि कर कि यह जाति तेरी प्रजा है।

14 यहोवा ने कहा, मैं आप चलूंगा और तुझे विश्राम दूंगा।

15 उसने उससे कहा, यदि तू आप न चले, तो हमें यहां से आगे न ले जा।

16 यह कैसे जाना जाए कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर और अपनी प्रजा पर है? क्या इस से नहीं कि तू हमारे संग संग चले, जिस से मैं और तेरी प्रजा के लोग पृथ्वी भर के सब लोगों से अलग ठहरें?

17 यहोवा ने मूसा से कहा, मैं यह काम भी जिसकी चर्चा तू ने की है करूंगा; क्योंकि मेरे अनुग्रह की दृष्टि तुझ पर है, और तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है।

18 उसने कहा मुझे अपना तेज दिखा दे।

19 उसने कहा, मैं तेरे सम्मुख हो कर चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊंगा, और तेरे सम्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूंगा, और जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूं उसी पर अनुग्रह करूंगा, और जिस पर दया करना चांहू उसी पर दया करूंगा।

20 फिर उसने कहा, तू मेरे मुख का दर्शन नहीं कर सकता; क्योंकि मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीवित नहीं रह सकता।

21 फिर यहोवा ने कहा, सुन, मेरे पास एक स्थान है, तू उस चट्टान पर खड़ा हो;

22 और जब तक मेरा तेज तेरे साम्हने होके चलता रहे तब तक मैं तुझे चट्टान के दरार में रखूंगा, और जब तक मैं तेरे साम्हने हो कर न निकल जाऊं तब तक अपने हाथ से तुझे ढांपे रहूंगा;

23 फिर मैं अपना हाथ उठा लूंगा, तब तू मेरी पीठ का तो दर्शन पाएगा, परन्तु मेरे मुख का दर्शन नहीं मिलेगा॥

प्रार्थना परमेश्वर से एक वार्तालाप है . वार्तालाप अनौपचारिक विचारो का शब्दो द्वारा किया गया आदान प्रदान है . अगर प्रार्थना एक वार्तालाप है तो उसमे बोलना और सुनना दोनो होता है . हमारी प्रार्थना मे बढोतरी तभी दिखती है जब हम कम बात करते है और परमेश्वर का ज्यादा सुनना चाहते है .

यहा वचन मे एक सुंदर तस्वीर हमे बतायी गयी है, जहा पर कहा गया कि परमेश्वर मुसा से ऐसे बात करते थे जैसे "एक आदमी अपने मित्र से बात करता है" . जब हम परमेश्वर से बात करते है तो हमे वैसे है बात करना चाहिए जैसे हम अपने मित्रो से बात करते है . प्रार्थना मे साहसी, इमानदार और वास्तविक बनो, उसको आदर करना भी याद रखे . और परमेश्वर अपने संतानो के साथ संतोष पाते है, जैसे संसार के पिता अपने बच्चो मे बेहिचक प्रसन्न रहे .

कार्य : आज परमेश्वर के वार्तालाप का आनंद उठाइए .

दिन १७

इब्रानी ५ : १ से १७

1 क्योंकि हर एक महायाजक मनुष्यों में से लिया जाता है, और मनुष्यों ही के लिये उन बातों के विषय में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, ठहराया जाता है: कि भेंट और पाप बलि चढ़ाया करे।

2 और वह अज्ञानों, और भूले भटकों के साथ नर्मी से व्यवहार कर सकता है इसलिये कि वह आप भी निर्बलता से घिरा है।

3 और इसी लिये उसे चाहिए, कि जैसे लोगों के लिये, वैसे ही अपने लिये भी पाप-बलि चढ़ाया करे।

4 और यह आदर का पद कोई अपने आप से नहीं लेता, जब तक कि हारून की नाईं परमेश्वर की ओर से ठहराया न जाए।

5 वैसे ही मसीह ने भी महायाजक बनने की बड़ाई अपने आप से नहीं ली, पर उस को उसी ने दी, जिस ने उस से कहा था, कि तू मेरा पुत्र है, आज मैं ही ने तुझे जन्माया है।

6 वह दूसरी जगह में भी कहता है, तू मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिये याजक है।

7 उस ने अपनी देह में रहने के दिनों में ऊंचे शब्द से पुकार पुकार कर, और आंसू बहा बहा कर उस से जो उस को मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएं और बिनती की और भक्ति के कारण उस की सुनी गई।

8 और पुत्र होने पर भी, उस ने दुख उठा उठा कर आज्ञा माननी सीखी।

9 और सिद्ध बन कर, अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिये सदा काल के उद्धार का कारण हो गया।

10 और उसे परमेश्वर की ओर से मलिकिसिदक की रीति पर महायाजक का पद मिला॥

11 इस के विषय में हमें बहुत सी बातें कहनी हैं, जिन का समझना भी कठिन है; इसलिये कि तुम ऊंचा सुनने लगे हो।

12 समय के विचार से तो तुम्हें गुरू हो जाना चाहिए था, तौभी क्या यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए ओर ऐसे हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए।

13 क्योंकि दूध पीने वाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहिचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है।

14 पर अन्न सयानों के लिये है, जिन के ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिये पक्के हो गए हैं॥

वचन ७ मे वताया गया कि कैसे यीशु ने प्रार्थना और विनती कि थी . हमारी विनतिया परमेश्वर के सामने रखने के कई कारण है .

१ . परमेश्वर के उद्देश को पुरा करना .

२ . परमेश्वर ने हमे मांगने को कहा है, हम उसकी इस आज्ञा को मानकर आशिष पाते है .

३ . यह हमे परमेश्वर पर निर्भर रहने के लिए मदत करता है और यह एहसास दिलाता है वो नियंत्रण मे है .

परमेश्वर हमेशा हमारे प्रर्थनाओ का उत्तर देता है .

उसका उत्तर 'हा', 'ना' 'इंतजार करो', या 'मै तुमको इससे वेहतर दुंगा' ऐसा होता है .

अगर हमारी मांग सही नही तो उसका उत्तर ः 'नही',

अगर समय सही नही तो उसका उत्तर ः थोडा रूको,

अगर आप तैयार नही है तो उसको उत्तर ः और वढो,

अगर सवकुच सही है तो वह आगे वढने के लिए कहता है .

कार्य ः उसके सिद्ध समय के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दो .

दिन १८

युहन्ना १४ ः १ से १४

1 तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो।

2 मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं।

3 और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।

4 और जहां मैं जाता हूं तुम वहां का मार्ग जानते हो।

5 थोमा ने उस से कहा, हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू हां जाता है तो मार्ग कैसे जानें?

6 यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।

7 यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते, और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है।

8 फिलेप्पुस ने उस से कहा, हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे: यही हमारे लिये बहुत है।

9 यीशु ने उस से कहा; हे फिलेप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूं, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है: तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा।

10 क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं पिता में हूं, और पिता मुझ में हैं? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूं, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।

11 मेरी ही प्रतीति करो, कि मैं पिता में हूं; और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो।

12 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।

13 और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।

14 यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा।

हम प्रार्थना के अंत मे 'यीशु के नाम से' ऐसा क्यों कहते है? हम ऐसा इसलिए कहते है,क्यों हम यीशु के इच्छा के साथ रहना चाहते है.क्या हमे यह विश्वास है कि हम जो यीशु के नाम से मांगते है वो

उसके इच्छा से ही है ? क्या कई वार हमे पता होता है कि जो हम मांगते है उसमे परमेश्वर कि इच्छा नही है? ऐसे स्थिती मे बुद्धीमानी इसे मे है कि हम वह कहे जैसा यीशु ने कहा 'जैसी मेरी नही लेकिन तेरी इच्छा पुरी हो'. लुका २२ ः ४२.

सी एस लुइस ने कहा 'प्रार्थना एक विनती है. विनती का मतलव है कि पुरी कि जा सकती या नही भी कि जा सकती है. और अगर एक असिम ज्ञान रखने वाला परिमित और मुर्ख कि वात सुनता है तो वेशक वो हा कहेगा और कभी नही'.

कार्य ः प्रार्थना किजिए कि हमारी प्रार्थनाए उसके इच्छा के अनुसार हो.

दिन १९

इब्रानी ४ ः १२ से १६

12 क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।

13 और सृष्टि की कोई वस्तु उस से छिपी नहीं है वरन जिस से हमें काम है, उस की आंखों के साम्हने सब वस्तुएं खुली और बेपरदा हैं॥

14 सो जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात परमेश्वर का पुत्र यीशु; तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामें रहे।

15 क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।

16 इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे॥

परमेश्वर ने लेखको द्वारा बोले गए शब्द मृत नही है. उसके शब्द जीवीत, कार्य करने वाला और दोधारी तलवार जैसे है. बायवल पढने से और प्रार्थना करने से परमेश्वर से वार्तालाप होता है.

जॉन स्टॉट ने कहा कि 'अगर फोन पे वात करते समय लाइन कट जाती है तो हम इस नतिजे पर नही पहुचते कि सामने वाला व्यक्ति मर गया'. हमे शमुवेल के जैसा स्वभाव रखना है जिसने कहा 'बोल, तेरा दास सुन रहा है'. १ला शमुवेल ३ः१०.

हम पहले बायवल पढकर फिर प्रार्थना कर सकते है या पहले प्रार्थना करके वाद मे बायवल पढ सकते है. यह इतना जरूरी नही, जरूरी यह है कि हम परमेश्वर से वार्तालाप मे वात करे और उसकी भी सुने. कई वार हम यह सोचते है कि सिर्फ बायवल पढने ने से ही हम परमेश्वर का सुनते है. वचन को हमे सिर्फ पढना नही लेकिन सुनना भी है.

हमे हमारी आंखो को कानो मे वदलना है. युहन्ना १०ः२७ मे यीशु ने कहा कि 'मेरी भेडे मेरा आवाज सुनती है और मै उन्हे पहचानता हूं और वे मेरे पिछे चलती है'.

कार्य ः हर दिन और लगातार बायवल पढने का और पालन करने का निर्णय करे.

दिन २०
मत्ती १९ ः १६ से ३०

16 और देखो, एक मनुष्य ने पास आकर उस से कहा, हे गुरू; मैं कौन सा भला काम करूं, कि अनन्त जीवन पाऊं?
17 उस ने उस से कहा, तू मुझ से भलाई के विषय में क्यों पूछता है? भला तो एक ही है; पर यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं को माना कर।
18 उस ने उस से कहा, कौन सी आज्ञाएं? यीशु ने कहा, यह कि हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना।
19 अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।
20 उस जवान ने उस से कहा, इन सब को तो मैं ने माना है अब मुझ में किस बात की घटी है?
21 यीशु ने उस से कहा, यदि तू सिद्ध होना चाहता है; तो जा, अपना माल बेचकर कंगालों को दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरे पीछे हो ले।
22 परन्तु वह जवान यह बात सुन उदास होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था॥
23 तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है।
24 फिर तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।
25 यह सुनकर, चेलों ने बहुत चकित होकर कहा, फिर किस का उद्धार हो सकता है?
26 यीशु ने उन की ओर देखकर कहा, मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।
27 इस पर पतरस ने उस से कहा, कि देख, हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिये हैं: तो हमें क्या मिलेगा?
28 यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि नई उत्पत्ति से जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिहांसन पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये हो, बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे।
29 और जिस किसी ने घरों या भाइयों या बहिनों या पिता या माता या लड़केबालों या खेतों को मेरे नाम के लिये छोड़ दिया है, उस को सौ गुना मिलेगा: और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा।
30 परन्तु बहुतेरे जो पहिले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, पहिले होंगे॥

यहा वचन मे लिखा है यीशु इस जवान व्यक्ति को तीन चुनौतीया देता है, जो यीशु के पास अनंत जीवन के लिए आया था . जाओ, वेचो, दान करो . शायद यह चुनौती यीशु हमे भी दे रहे है .

जाओ ः जैसे परमेश्वर हमे वनाना चाहते है वैसे वनने से हमे कौनसी चीजे रोक सकती है वह समझना . कौनसी वाते हमे धार्मिकता मे वढने से रोकती है? . परमेश्वर आपको वुला रहे है लेकिन आप उनको उत्तर दे नही पा रहे है .

बेचदो ः उन चीजो को जीवन से निकालना जो आपको यीशु को प्रभु वनाने से रोकती है . जैसे वह किताबे, वेवसाइट या ऐसी चीजे जीवन से निकालना और प्रार्थना, वायवल अधयन, शिष्यो के लिए और सुसमाचार सुनाने के लिए समय निकालना .

दान करो ः अपने जीवन का रूख वदना ताकि आपका जीवन स्वकेंद्रीत न हो . परमेश्वर ने हमे दुसरो के लिए जीने के लिए वनाया सिर्फ अपने लिए नही . आपका जीवन आप वेहतरीन जी सकते है जव आप दुसरो के लिए चिंतीत होते है .

कई वार हम इस वात से निराश होते है कि हम संसार को वदल नही सकते और इस कारण हम वे छोटे कार्य भी करना छोड देते है जो हमारे सामने होते है . मत्ती २५ ः २१ मे काहा है कि 'आप जो थोडे वातो विश्वासी है और मै आप को ज्यादा चीजो कि जिम्मेदारी दूंगा .

कार्य ः जाइए और वो कार्य किजीए जो आप करना चाहते थे लेकिन कर नही पाए . और वो करना वंद किजीए जो आप वंद करना चाहते थे लेकिन कर रहे है .

दिन २१

अय्युब १ ः ६ से २२

6 एक दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके साम्हने उपस्थित हुए, और उनके बीच शैतान भी आया।

7 यहोवा ने शैतान से पूछा, तू कहां से आता है? शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, कि पृथ्वी पर इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते आया हूँ।

8 यहोवा ने शैतान से पूछा, क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय मानने वाला और बुराई से दूर रहने वाला मनुष्य और कोई नहीं है।

9 शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है?

10 क्या तू ने उसकी, और उसके घर की, और जो कुछ उसका है उसके चारों ओर बाड़ा नहीं बान्धा? तू ने तो उसके काम पर आशीष दी है,

11 और उसकी सम्पत्ति देश भर में फैल गई है। परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छू; तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा।

12 यहोवा ने शैतान से कहा, सुन, जो कुछ उसका है, वह सब तेरे हाथ में है; केवल उसके शरीर पर हाथ न लगाना। तब शैतान यहोवा के साम्हने से चला गया।
13 एक दिन अय्यूब के बेटे-बेटियां बड़े भाई के घर में खाते और दाखमधु पी रहे थे;
14 तब एक दूत अय्यूब के पास आकर कहने लगा, हम तो बैलों से हल जोत रहे थे, और गदहियां उनके पास चर रही थी,
15 कि शबा के लोग धावा कर के उन को ले गए, और तलवार से तेरे सेवकों को मार डाला; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूँ।
16 वह अभी यह कह ही रहा था कि दूसरा भी आकर कहने लगा, कि परमेश्वर की आग आकाश से गिरी और उस से भेड़-बकरियां और सेवक जलकर भस्म हो गए; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूँ।
17 वह अभी यह कह ही रहा था, कि एक और भी आकर कहने लगा, कि कसदी लोग तीन गोल बान्धकर ऊंटों पर धावा कर के उन्हें ले गए, और तलवार से तेरे सेवकों को मार डाला; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूँ।
18 वह अभी यह कह ही रहा था, कि एक और भी आकर कहने लगा, तेरे बेटे-बेटियां बड़े भाई के घर में खाते और दाखमधु पीते थे,
19 कि जंगल की ओर से बड़ी प्रचण्ड वायु चली, और घर के चारों कोनों को ऐसा झोंका मारा, कि वह जवानों पर गिर पड़ा और वे मर गए; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूँ।
20 तब अय्यूब उठा, और बागा फाड़, सिर मुंड़ाकर भूमि पर गिरा और दण्डवत् कर के कहा,
21 मैं अपनी मां के पेट से नंगा निकला और वहीं नंगा लौट जाऊंगा; यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है।
22 इन सब बातों में भी अय्यूब ने न तो पाप किया, और न परमेश्वर पर मूर्खता से दोष लगाया।

परमेश्वर के विश्वास मे चलना आसान नही और लगातार उसमे रहना वहुत मुश्कील है . जव जीवन अच्छा है तो विश्वास करना आसान है लेकिन जव परेशानी आती है तो क्या होता है?हम यह गाना गाते है कि 'परमेश्वए हमेशा अच्छा हैं' लेकिन कठीण समय मे विश्वास करना मुश्कील है .
अय्युव एक अमीर, सफल व्यक्ती था और एक वडे परिवार का पिता था . तव, एक विजली चमकती है वैसे उसे वुरी खवर उसे मिली . उसके उंट, गध, भेड चले गए, उसकी संपत्ती चली गयी, उसकी वेट, वेटी खत्म हो गई . यह स्तव्द खवरे अय्युव ने सुनी और वचन २१ मे कहा कि 'अय्युव ने जमीन

पर गीरकर परमेश्वर कि आराधना की'.

क्या हमारी आरधना अच्छी या वुरी खवरो के अनुसार वदलती है ?

अय्युव २ ः ९ से १०.. **9** तब उसकी स्त्री उस से कहने लगी, क्या तू अब भी अपनी खराई पर बना है? परमेश्वर की निन्दा कर, और चाहे मर जाए तो मर जा। **10** उसने उस से कहा, तू एक मूढ़ स्त्री की सी बातें करती है, क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुःख न लें? इन सब बातों में भी अय्यूब ने अपने मुंह से कोई पाप नहीं किया।

क्या हम परमेश्वर कि आराधना चुनौती भरे जीवन मे भी करेंगे? यह हमारे परमेश्वर के साथ रिश्ते के स्तिरता को दिखाता है.

कार्य ः यीशु के प्रति अपनी वफादारी का संकल्प करे. अगर उनका स्थान आपके जीवन पहला नही है तो आज ही उनको अपने जीवन का प्रभु वनाइए.

दिन २२

मत्ती १५ ः २९ से ३९

29 यीशु वहां से चलकर, गलील की झील के पास आया, और पहाड़ पर चढ़कर वहां बैठ गया।

30 और भीड़ पर भीड़ लंगड़ों, अन्धों, गूंगों, टुंडों, और बहुत औरों को लेकर उसके पास आए; और उन्हें उस के पांवों पर डाल दिया, और उस ने उन्हें चंगा किया।

31 सो जब लोगों ने देखा, कि गूंगे बोलते और टुण्डे चंगे होते और लंगड़े चलते और अन्धे देखते हैं, तो अचम्भा करके इस्राएल के परमेश्वर की बड़ाई की॥

32 यीशु ने अपने चेलों को बुलाकर कहा, मुझे इस भीड़ पर तरस आता है; क्योंकि वे तीन दिन से मेरे साथ हैं और उन के पास कुछ खाने को नहीं; और मैं उन्हें भूखा विदा करना नहीं चाहता; कहीं ऐसा न हो कि मार्ग में थककर रह जाएं।

33 चेलों ने उस से कहा, हमें जंगल में कहां से इतनी रोटी मिलेगी कि हम इतनी बड़ी भीड़ को तृप्त करें?

34 यीशु ने उन से पूछा, तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं? उन्होंने कहा; सात और थोड़ी सी छोटी मछिलयां।

35 तब उस ने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी।

36 और उन सात रोटियों और मछिलयों को ले धन्यवाद करके तोड़ा और अपने चेलों को देता गया; और चेले लोगों को।

37 सो सब खाकर तृप्त हो गए और बचे हुए टुकड़ों से भरे हुए सात टोकरे उठाए।

38 और खाने वाले स्त्रियों और बालकों को छोड़ चार हजार पुरूष थे।

39 तब वह भीड़ को विदा करके नाव पर चढ़ गया, और मगदन देश के सिवानों में आया॥

जो धार्मिकता मे मजबूत होते है उनके पास एक आभारी दिल होता है . 'मचली और रोटी' शिष्यो को देने से पहले यीशु ने परमेश्वर को धन्यवाद दिया . यीशु कि आदत थी कि वे अपने अच्छाइयो के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते थे .

सुवह उठने के वाद सवसे पहले हम क्या करते है? क्या हम 'व्हाटस अप' देखने के लिए मोवाइल चेक करते है या वुरी खवरो से भरा अखवार पढते है? हम स्वाभाविक रूप से वुरी वात की ओर खिंचे चले जाते है .

भजनसहिंता वढकर उसके द्वारा प्रार्थना किजिए औत आपके पास परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए कई शव्द होंगे .

कार्य ः परमेश्वर को उन चिजो के लिए धन्यवाद दिजीए जो आपको मिली है . जैसे परिवार,सेहत, उध्दार .

दिन २३

२ रा शमुवेल २३ ः ८ से १७

8 दाऊद के शूरवीरों के नाम ये हैं: अर्थात तहकमोनी योश्शेब्यश्शेबेत, जो सरदारों में मुख्य था; वह एस्नी अदीनो भी कहलाता था; जिसने एक ही समय में आठ सौ पुरुष मार डाले।

9 उसके बाद अहोही दोदै का पुत्र एलीआज़र था। वह उस समय दाऊद के संग के तीनों वीरों में से था, जब कि उन्होंने युद्ध के लिये एकत्रित हुए पलिश्तियों को ललकारा, और इस्राएली पुरुष चले गए थे।

10 वह कमर बान्धकर पलिश्तियों को तब तक मारता रहा जब तक उसका हाथ थक न गया, और तलवार हाथ से चिपट न गई; और उस दिन यहोवा ने बड़ी विजय कराई; और जो लोग उसके पीछे हो लिए वे केवल लूटने ही के लिये उसके पीछे हो लिए।

11 उसके बाद आगे नाम एक पहाड़ी का पुत्र शम्मा था। पलिश्तियों ने इकट्ठे हो कर एक स्थान में दल बान्धा, जहां मसूर का एक खेत था; और लोग उनके डर के मारे भागे।

12 तब उसने खेत के मध्य में खड़े हो कर उसे बचाया, और पलिश्तियों को मार लिया; और यहोवा ने बड़ी विजय दिलाई।

13 फिर तीसों मुख्य सरदारों में से तीन जन कटनी के दिनों में दाऊद के पास अदुल्लाम नाम गुफ़ा में आए, और पलिश्तियों का दल रपाईम नाम तराई में छावनी किए हुए था।

14 उस समय दाऊद गढ़ में था; और उस समय पलिश्तियों की चौकी बेतलेहेम में थी।

15 तब दाऊद ने बड़ी अभिलाषा के साथ कहा, कौन मुझे बेतलेहेम के फाटक के पास के कुएं का पानी पिलाएगा?

16 तो वे तीनों वीर पलिश्तियों की छावनी में टूट पड़े, और बेतलेहेम के फाटक के कुंए से पानी भर के दाऊद के पास ले आए। परन्तु उसने पीने से इनकार किया, और यहोवा के साम्हने अर्घ करके उण्डेला,

17 और कहा, हे यहोवा, मुझ से ऐसा काम दूर रहे। क्या मैं उन मनुष्यों का लोहू पीऊं जो अपने प्राणों पर खेल कर गए थे? इसलिये उसने उस पानी को पीने से इनकार किया। इन तीन वीरों ने तो ये ही काम किए।

यह घटना है जब दाऊद पलिश्तीयो के खिलाफ सैनिको की अगुवाई कर रहा था . दाउद ने यरूशने के घाटियो को देखा जहा वह पला बडा था . वह प्यासा था और उसे कुंअे के बारे मे सोचा और उसने उंची आवाज मे उस कुअे के पानी पिने कि इच्छा प्रकट कि .
इसपर बिना सोचे दाउद के तीन योध्दाओ ने अपने जीवन को खतरे मे डालकर उस कुअे से पानी लेकर सुरक्षित दाउद के पास पहुंचे . उनकी वफादारी देखकर दाउद चकित और दंग रह गया . उसने उनके इस महंगे उपहार को स्वीकार किया और परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए जमीन पर डाल दिया . हमे पता नही कि उन योध्दाओ कि प्रतिकिया क्या थी . मुझे लगता है कि ऐसा नही कि दाउद को उनकी कदर नही थी, लेकिन वह परमेश्वर को सबसे किमती तोहफा देना चाहता था .

कार्य ः परमेश्वर के प्रति अपना लवलिनता दिखाने के लिए कुछ चीज छोड दिजिए जो आपको प्यारा है .

दिन २४

मरकुस १२ ः २८ से ३४

12 तब उन्होंने उसे पकड़ना चाहा; क्योंकि समझ गए थे, कि उस ने हमारे विरोध में यह दृष्टान्त कहा है: पर वे लोगों से डरे; और उसे छोड़ कर चले गए॥

13 तब उन्होंने उसे बातों में फंसाने के लिये कई एक फरीसियों और हेरोदियों को उसके पास भेजा।

14 और उन्होंने आकर उस से कहा; हे गुरू, हम जानते हैं, कि तू सच्चा है, और किसी की परवाह नहीं करता; क्योंकि तू मनुष्यों का मुंह देख कर बातें नहीं करता, परन्तु परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से बताता है।

15 तो क्या कैसर को कर देना उचित है, कि नहीं? हम दें, या न दें? उस ने उन का कपट जानकर उन से कहा; मुझे क्यों पर खते हो? एक दीनार मेरे पास लाओ, कि मैं देखूं।

16 वे ले आए, और उस ने उन से कहा; यह मूर्ति और नाम किस का है? उन्होंने कहा, कैसर का।

17 यीशु ने उन से कहा; जो कैसर का है वह कैसर को, और जो परमेश्वर का है परमेश्वर को दो: तब वे उस पर बहुत अचम्भा करने लगे॥

18 फिर सदूकियों ने भी, जो कहते हैं कि मरे हुओं का जी उठना है ही नहीं, उसके पास आकर उस से पूछा।

19 कि हे गुरू, मूसा ने हमारे लिये लिखा है, कि यदि किसी का भाई बिना सन्तान मर जाए, और उस की पत्नी रह जाए, तो उसका भाई उस की पत्नी को ब्याह ले और अपने भाई के लिये वंश उत्पन्न करे: सात भाई थे।

20 पहिला भाई ब्याह करके बिना सन्तान मर गया।

21 तब दूसरे भाई ने उस स्त्री को ब्याह लिया और बिना सन्तान मर गया; और वैसे ही तीसरे ने भी।

22 और सातों से सन्तान न हुई: सब के पीछे वह स्त्री भी मर गई।

23 सो जी उठने पर वह उन में से किस की पत्नी होगी? क्योंकि वह सातों की पत्नी हो चुकी थी।

24 यीशु ने उन से कहा; क्या तुम इस कारण से भूल में नहीं पड़े हो, कि तुम न तो पवित्र शास्त्र ही को जानते हो, और न परमेश्वर की सामर्थ को।

25 क्योंकि जब वे मरे हुओं में से जी उठेंगे, तो उन में ब्याह शादी न होगी; पर स्वर्ग में दूतों की नाईं होंगे।

26 मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने मूसा की पुस्तक में झाड़ी की कथा में नहीं पढ़ा, कि परमेश्वर ने उस से कहा, मैं इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं?

27 परमेश्वर मरे हुओं का नहीं, वरन जीवतों का परमेश्वर है: सो तुम बड़ी भूल में पड़े हो॥

28 और शास्त्रियों में से एक ने आकर उन्हें विवाद करते सुना, और यह जानकर कि उस ने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया; उस से पूछा, सब से मुख्य आज्ञा कौन सी है?

29 यीशु ने उसे उत्तर दिया, सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है; हे इस्राएल सुन; प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है।

30 और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।

31 और दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना: इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।

32 शास्त्री ने उस से कहा; हे गुरू, बहुत ठीक! तू ने सच कहा, कि वह एक ही है, और उसे छोड़

और कोई नहीं।

33 और उस से सारे मन और सारी बुद्धि और सारे प्राण और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना और पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना, सारे होमों और बलिदानों से बढ़कर है।

34 जब यीशु ने देखा कि उस ने समझ से उत्तर दिया, तो उस से कहा; तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं: और किसी को फिर उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ॥

आज हम उदारता और प्रेम करके अंदर से मजवूत होने पर ध्यान देंगे . पुराने नियम मे २०० से ज्यादा वार अपने पडोसी के लिए चिंता करने के वारे मे लिखा है . लेकिन यीशु ने हमसे यह कहा कि "अपने पडोसी से 'अपने समान' प्रेम करा" . पौलस फिलीपीयो २ः४ मे यह कहता है कि "हम अपनी ही नही लकिन दुसरो कि भी चिंता करे" . यह लगभग ऐसा है कि अपने जैसे दुसरो खयाल करे .

ज्यादातर लोग इस वचन अर्थ यह समझते है कि 'हमे अपने आप से प्रेम करना कै ताकि हम दुसरो से वेहतर प्रेम कर सकते है' . लेकिन यीशु यह कहते है कि 'जैसे हम स्वाभाविक रूप से अपनी चिंता करते है वेसा स्वभाव दुसरो के लिए आना है' . जो भी हम अपने लिए चाहते है वो ही दुसरो के लिए भी चाहे . अपनी और दुसरो की जरूरतो को एक सही संतुलन रखे .

कार्य ः आज किसी के लिए वो करे जो आप अपने आप से करोगे .

दिन २५

मत्ती ६ ः १९ से २४

6 परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द कर के अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।

7 प्रार्थना करते समय अन्यजातियों की नाईं बक बक न करो; क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उन की सुनी जाएगी।

8 सो तुम उन की नाईं न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहिले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या क्या आवश्यक्ता है।

9 सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो; "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।

10 तेरा राज्य आए; तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।

11 हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।

12 और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर।

13 और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं।" आमीन।

14 इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।

15 और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा॥

16 जब तुम उपवास करो, तो कपटियों की नाईं तुम्हारे मुंह पर उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मुंह बनाए रहते हैं, ताकि लोग उन्हें उपवासी जानें; मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।

17 परन्तु जब तू उपवास करे तो अपने सिर पर तेल मल और मुंह धो।

18 ताकि लोग नहीं परन्तु तेरा पिता जो गुप्त में है, तुझे उपवासी जाने; इस दशा में तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा॥

19 अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं।

20 परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं।

21 क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।

22 शरीर का दिया आंख है: इसलिये यदि तेरी आंख निर्मल हो, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा।

23 परन्तु यदि तेरी आंख बुरी हो, तो तेरा सारा शरीर भी अन्धियारा होगा; इस कारण वह उजियाला जो तुझ में है यदि अन्धकार हो तो वह अन्धकार कैसा बड़ा होगा।

24 कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर ओर दूसरे से प्रेम रखेगा, वा एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा; "तुम परमेश्वर और धन दोनो की सेवा नहीं कर सकते"।

वचन २२ कि ओर ध्यान दे कि अगर हमारी आंख शुध्द है तो सारा शरीर उजियाला होगा . मुल वचन यह बताता है कि अगर आंख उदार होगी तो हमारा पुरा शरीर चमक उठेगा . हमारी आंखे हमारे जीवन को दृष्टीकोन दिखाती है . मतलव अगर हमारी आंखे उदार है तो हमारा पुरा व्यक्तित्व उदारता से चमक उठेगा .

सब बातो मे यीशु हमारे लिए उदाहरण है . वो अपने समय मे सब के प्रति उदार था और इसलिए उसका पुरा व्यक्तित्व उजियाले से भरा हुआ था .

युहन्ना ६ मे एक लडके की आंखे अपने मछलिया और रोटी' बाटने के लिए उदार थी जिससे ५000 हजार लागो को फायदा हुआ . वह अपने खाने को छुपा के रख सकता था लेकिन उसकी उदारता के कारण लोग यीशु ने किए एक महान चमत्कार के साक्षी बन गए .

कार्य : आज किसी के साथ उदारता दिखाकर यीशु के उजियाले को अपने मे चमकने दे .

दिन २६
युहन्ना ५ ः १ से १९

1 इन बातों के पीछे यहूदियों का एक पर्व हुआ और यीशु यरूशलेम को गया॥

2 यरूशलेम में भेड़-फाटक के पास एक कुण्ड है जो इब्रानी भाषा में बेतहसदा कहलाता है, और उसके पांच ओसारे हैं।

3 इन में बहुत से बीमार, अन्धे, लंगड़े और सूखे अंग वाले (पानी के हिलने की आशा में) पड़े रहते थे।

4 (क्योंकि नियुक्ति समय पर परमेश्वर के स्वर्गदूत कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाया करते थे: पानी हिलते ही जो कोई पहिले उतरता वह चंगा हो जाता था चाहे उसकी कोई बीमारी क्यों न हो।)

5 वहां एक मनुष्य था, जो अड़तीस वर्ष से बीमारी में पड़ा था।

6 यीशु ने उसे पड़ा हुआ देखकर और जानकर कि वह बहुत दिनों से इस दशा में पड़ा है, उस से पूछा, क्या तू चंगा होना चाहता है?

7 उस बीमार ने उस को उत्तर दिया, कि हे प्रभु, मेरे पास कोई मनुष्य नहीं, कि जब पानी हिलाया जाए, तो मुझे कुण्ड में उतारे; परन्तु मेरे पहुंचते पहुंचते दूसरा मुझ से पहिले उतर पड़ता है।

8 यीशु ने उस से कहा, उठ, अपनी खाट उठाकर चल फिर।

9 वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया, और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने लगा।

10 वह सब्त का दिन था। इसलिये यहूदी उस से, जो चंगा हुआ था, कहने लगे, कि आज तो सब्त का दिन है, तुझे खाट उठानी उचित्त नहीं।

11 उस ने उन्हें उत्तर दिया, कि जिस ने मुझे चंगा किया, उसी ने मुझ से कहा, अपनी खाट उठाकर चल फिर।

12 उन्होंने उस से पूछा वह कौन मनुष्य है जिस ने तुझ से कहा, खाट उठाकर चल फिर?

13 परन्तु जो चंगा हो गया था, वह नहीं जानता था वह कौन है; क्योंकि उस जगह में भीड़ होने के कारण यीशु वहां से हट गया था।

14 इन बातों के बाद वह यीशु को मन्दिर में मिला, तब उस ने उस से कहा, देख, तू तो चंगा हो गया है; फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इस से कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।

15 उस मनुष्य ने जाकर यहूदियों से कह दिया, कि जिस ने मुझे चंगा किया, वह यीशु है।

16 इस कारण यहूदी यीशु को सताने लगे, क्योंकि वह ऐसे ऐसे काम सब्त के दिन करता था।

17 इस पर यीशु ने उन से कहा, कि मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूं।

18 इस कारण यहूदी और भी अधिक उसके मार डालने का प्रयत्न करने लगे, कि वह न केवल सब्त के दिन की विधि को तोड़ता, परन्तु परमेश्वर को अपना पिता कह कर, अपने आप को परमेश्वर के तुल्य ठहराता था॥

19 इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।

परमेश्वर के मार्ग नही समझने के कारण हम तनावपुर्ण जीवन जीते है . अपने पिता के ज्ञान और समज रखने वाले यीशु हमारे सामने एक सिध्द उदाहरण है . उनके सामने वाली हर परिस्थिती मे यीशु ने कभीभी जल्दवाजी नही कि .

आज के इस वचन मे हम यीशु को वेथसदा के तलाव के यहा गुजरते देखते, जहा कइ लोग जो हताश वैठे थे लेकिन यीशु ने एक से ही पुछा, 'क्या तुम चंगा होना चाहते हो? यीशु ने यह प्रश्न सवसे क्यो नही पुछा ? क्या सवको चंगाई कि जरूरत नही थी ? एक के ओर ही ध्यान क्यों दिया ? इसका उत्तर हमे वचन १७ से १९ मे मिलता है : **मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूं। ....पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है,** यीशु को हमेशा उपर से मार्गर्शन मिला, न कि उसके चारो ओर क्या चल रहा है वहा से . यीशु ने हमेशा स्वर्ग कि ओर से मार्गदार्शन लिया और सव को नही, लेकिन एक को चंगाई दी .

क्या आप कुछ भी करने से पहले परमेश्वर से पुछते है ?

कार्य : आज ५ लोगो के साथ अपना विश्वास वाटिए और उनको वताइए कि उनको आत्मीक चंगाई की जरूरत है .

दिन २७

यशयाह ५५ : १ से १३

1 अहो सब प्यासे लोगो, पानी के पास आओ; और जिनके पास रूपया न हो, तुम भी आकर मोल लो और खाओ! दाखमधु और दूध बिन रूपए और बिना दाम ही आकर ले लो।

2 जो भोजनवस्तु नहीं है, उसके लिये तुम क्यों रूपया लगाते हो, और, जिस से पेट नहीं भरता उसके लिये क्यों परिश्रम करते हो? मेरी ओर मन लगाकर सुनो, तब उत्तम वस्तुएं खाने पाओगे और चिकनी चिकनी वस्तुएं खाकर सन्तुष्ट हो जाओगे।

3 कान लगाओ, और मेरे पास आओ; सुनो, तब तुम जीवित रहोगे; और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बान्धूंगा अर्थात दाऊद पर की अटल करूणा की वाचा।

4 सुनो, मैं ने उसको राज्य राज्य के लोगों के लिये साक्षी और प्रधान और आज्ञा देने वाला ठहराया है।

5 सुन, तू ऐसी जाति को जिसे तू नहीं जानता बुलाएगा, और ऐसी जातियां जो तुझे नहीं जानतीं तेरे पास दौड़ी आएंगी, वे तेरे परमेश्वर यहोवा और इस्राएल के पवित्र के निमित्त यह करेंगी, क्योंकि उसने तुझे शोभायमान किया है॥

6 जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो;

7 दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।

8 क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है।

9 क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है॥

10 जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहां यों ही लौट नहीं जाते, वरन भूमि पर पड़कर उपज उपजाते हैं जिस से बोने वाले को बीज और खाने वाले को रोटी मिलती है,

11 उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु, जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैं ने उसको भेजा है उसे वह सफल करेगा॥

12 क्योंकि तुम आनन्द के साथ निकलोगे, और शान्ति के साथ पहुंचाए जाओगे; तुम्हारे आगे आगे पहाड़ और पहाडिय़ां गला खोल कर जयजयकार करेंगी, और मैदान के सब वृक्ष आनन्द के मारे ताली बजाएंगे।

13 तब भटकटैयों की सन्ती सनौवर उगेंगे; और बिच्छु पेड़ों की सन्ती मेंहदी उगेगी; और इस से यहोवा का नाम होगा, जो सदा का चिन्ह होगा और कभी न मिटेगा।

परमेश्वर के मार्ग मनुष्यो के मार्ग से वहुत अलग होने के कारण कभी कभी हमारे इच्छा के विपरित दिखाई पडते है . हम जीवन को एक दृष्टिकोन से देखते है और परमेश्वर अलग दृष्टिकोन से . हम सोचते होगे अगुवे होना मतलव दुसरो से सेवा कराना . जव कि यीशु ने कहा 'जो कोई तुममे वडा होना

चाहता है वो सबका सेवक बने . . मत्ती २०ः२६' . महान वो नही होते जिनके पास बहोत सेवक होते है, बल्कि वो जो ज्यादा लोगो कि सेवा करते है . शायद हम सोचते कि परमेश्वर को शरण जाना मतलब कुछ खोना है लेकिन मत्ती १६ः२५ मे लिखा है 'कि परमेश्वर को शरण जाना मतलब जीवन को बचाना है' . हम यह सुनते है कि अच्छे सेहत के लिए खाना,कसरत,आराम करना जरूरी है . १ ला तिमुती ४ः८ मे परमेश्वर कहते है कि 'भक्ति का जीवन सबसे जरूरी है' . अच्छा खाना,कसरत और आराम करना जरूरी है, लेकिन धार्मिक जीवन से बढकर नही .

हमने सुना है कि, स्वस्त आहार जरूरी है,मिडीया हमे बताता है कि 'जो आप खाते है, वो आप बनते है' . हम क्या खाते है, इससे भी ज्यादा यह जरूरी है हमे क्या 'खा' रहा है .

कार्य ः जो आप हमेशा करते है इसके विरूध्द कुछ किजिए ताकि आप परमेश्वर के संग चले .

दिन २८

मरकुस १२ ः ३५ से ४४

35 फिर यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए यह कहा, कि शास्त्री क्योंकर कहते हैं, कि मसीह दाऊद का पुत्र है?

36 दाऊद ने आप ही पवित्र आत्मा में होकर कहा है, कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों की पीढ़ी न कर दूं।

37 दाऊद तो आप ही उसे प्रभु कहता है, फिर वह उसका पुत्र कहां से ठहरा? और भीड़ के लोग उस की आनन्द से सुनते थे॥

38 उस ने अपने उपदेश में उन से कहा, शस्त्रियों से चौकस रहो, जो लम्बे वस्त्र पहिने हुए फिरना।

39 और बाजारों में नमस्कार, और आराधनालयों में मुख्य मुख्य आसन और जेवनारों में मुख्य मुख्य स्थान भी चाहते हैं।

40 वे विधवाओं के घरों को खा जाते हैं, और दिखाने के लिये बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं, ये अधिक दण्ड पाएंगे॥

41 और वह मन्दिर के भण्डार के साम्हने बैठकर देख रहा था, कि लोग मन्दिर के भण्डार में किस प्रकार पैसे डालते हैं, और बहुत धनवानों ने बहुत कुछ डाला।

42 इतने में एक कंगाल विधवा ने आकर दो दमडिय़ां, जो एक अधेले के बराबर होती है, डालीं।

43 तब उस ने अपने चेलों को पास बुलाकर उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि मन्दिर के भण्डार में डालने वालों में से इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है।
44 क्योंकि सब ने अपने धन की बढ़ती में से डाला है, परन्तु इस ने अपनी घटी में से जो कुछ उसका था, अर्थात अपनी सारी जीविका डाल दी है।

ीशु के चेले होने के नाते हमे धार्मिकता के शिक्षन का जरूरत है . उसमे से एक ह, आर्थिक अनुशासन . वचन ४१ मे यीशु मंदीर के सामने बैठे थे और देख रहे थे, जहा पर लोग अपना दान भंडार मे डाल रहे थे . जैसा यीशु आज भी हमे देखते है .

मेरा विश्वास है कि जहा देने कि बात आती है, तो वह पैसे को नही हमारे के दिल को दिखाता है . हमारी जेवे और दिल एक दुसरे जुडे है . पैसे के परिक्षा मे हम कैसे है? क्या हमारी कमाई के अनुसार हम देते है ? क्या हमारी आमदनी वढने से हमारा दशांश भी वढता है?क्या हम जीतना हमे मिलता है उससे परमेश्वर १० वा भाग और वचत के लिए १० वा भाग देकर जी रहे है? क्या हम वैठकर वजट वनाते है?आज हमे कौनसे वदलाव लाना है ताकि हम पैसे के परिक्षा का सामना करे? याद रखिए कि यीशु हमे देख रहे है .

कार्यः आज देने मे ऐसा निर्णय करे कि यीशु हमे देखकर आनंद करे .

दिन २९
कुलुसियो ४ ः २ से ६
2 प्रार्थना में लगे रहो, और धन्यवाद के साथ उस में जागृत रहो।
3 और इस के साथ ही साथ हमारे लिये भी प्रार्थना करते रहो, कि परमेश्वर हमारे लिये वचन सुनाने का ऐसा द्वार खोल दे, कि हम मसीह के उस भेद का वर्णन कर सकें जिस के कारण मैं कैद में हूं।
4 और उसे ऐसा प्रगट करूं, जैसा मुझे करना उचित है।
5 अवसर को बहुमूल्य समझ कर बाहर वालों के साथ बुद्धिमानी से बर्ताव करो।
6 तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो, कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना आ जाए।
धार्मिक जीवन का और एक भाग है समय का सही उपयोग करना . यीशु केवल हमारे दान को नही लेकिन हमारा समय हम कैसे विताते है वो भी देखते है . जॉन वेस्ली ने कहा कि 'समय के इस्तेमाल मे जो माहीर है वे कभी विना कामके नही होते और कोई काम के लिए कभी नगण्य या तुच्छ नही हाते'

अच्छे फोटोग्राफी मे सिर्फ आप तसवीर के अंदर क्या डालते है यह देखा नही जाते लेकिन तसवीर के वाहर क्या रखते है वो भी देखते है . वैसेही हमारी "नही" वोलने कि क्षमता हमारे "हा" वोलने क्षमता पर निर्भर है .

हमे जरूरी कामो को समय देने के लिए जो काम जरूरी नही उसको 'ना' वोलना जरूरी है . क्या हम "समय" के परिक्षा मे सफल होते है? यीशु ने हमे २४ घंटे दिए है और हमे १० प्रतिशत मतलव '२ . ४' घंटे परमेश्वर को वापस देना है . प्रार्थना, वायवल पढना, शिष्यो को समय देना, प्रचार इ . **कार्य** ः आप करने वाले अच्छे कामो कि सुचि वनाइए ताकि आपके पास गलत कामो लिए समय न हो .

दिन ३०

याकुब १ ः १२ सेा १८

12 धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर रहता है; क्योंकि वह खरा निकल कर जीवन का वह मुकुट पाएगा, जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करने वालों को दी है।

13 जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे, कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है।

14 परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा में खिंच कर, और फंस कर परीक्षा में पड़ता है।

15 फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।

16 हे मेरे प्रिय भाइयों, धोखा न खाओ।

17 क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिस में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, ओर न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।

18 उस ने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया, ताकि हम उस की सृष्टि की हुई वस्तुओं में से एक प्रकार के प्रथम फल हों॥

अक्सर लोग यह प्रश्न पुछते है कि, 'परमेश्वर हमे परिक्षा मे क्यों डालते है? . ग्रीक भाषा मे परिक्षा शब्द का मतलव है, परखा जाना, कोशिश करना, या सावीत करना . वायवल के अनुसार इसका उद्देश है कि, एक व्यक्ति के चरित्र को मजवुत करने के लिए उसे परखना . ओसवॉल्ड चेंवर्स ने कहा कि, "परमेश्वर एक ही पल किसीका दिल शुध्द कर सकते, है लेकिन वो भी एक ही पल मे किसीका चरित्र नही वदलते" .

चरित्र किमती नही होता ,अगर वो विना संघर्ष के नही वनता . ड ल मुडी ने कहा "प्रतिष्टा वो होती है कि लोग हमारे वारें क्या सोचते है, चरित्र वो होता है कि हम अंदर से कौन है" . आइए हम आनेवाले चुनौतियो का सामना करे और वढे, और चरित्र मे मजवुत वने .

कार्य ः आपके संघर्ष और परिक्षाओ के वारे मे किसीसे वात किजीए .

दिन ३१

मत्ती ११ ः १ से १९

1 जब यीशु अपने बारह चेलों को आज्ञा दे चुका, तो वह उन के नगरों में उपदेश और प्रचार करने को वहां से चला गया॥

2 यूहन्ना ने बन्दीगृह में मसीह के कामों का समाचार सुनकर अपने चेलों को उस से यह पूछने भेजा।

3 कि क्या आनेवाला तू ही है: या हम दूसरे की बाट जोहें?

4 यीशु ने उत्तर दिया, कि जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब जाकर यूहन्ना से कह दो।

5 कि अन्धे देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।

6 और धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए।

7 जब वे वहां से चल दिए, तो यीशु यूहन्ना के विषय में लोगों से कहने लगा; तुम जंगल में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को?

8 फिर तुम क्या देखने गए थे? क्या कोमल वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को? देखो, जो कोमल वस्त्र पहिनते हैं, वे राजभवनों में रहते हैं।

9 तो फिर क्यों गए थे? क्या किसी भविष्यद्वक्ता को देखने को? हां; मैं तुम से कहता हूं, वरन भविष्यद्वक्ता से भी बड़े को।

10 यह वही है, जिस के विषय में लिखा है, कि देख; मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं, जो तेरे आगे तेरा मार्ग तैयार करेगा।

11 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उन में से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से कोई बड़ा नहीं हुआ; पर जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है वह उस से बड़ा है।

12 यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य पर जोर होता रहा है, और बलवान उसे छीन लेते हैं।

13 यूहन्ना तक सारे भविष्यद्वक्ता और व्यवस्था भविष्यद्ववाणी करते रहे।

14 और चाहो तो मानो, एलिय्याह जो आनेवाला था, वह यही है।

15 जिस के सुनने के कान हों, वह सुन ले।

16 मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से दूं? वे उन बालकों के समान हैं, जो बाजारों में बैठे हुए एक दूसरे से पुकारकर कहते हैं।

17 कि हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई, और तुम न नाचे; हम ने विलाप किया, और तुम ने छाती नहीं पीटी।

18 क्योंकि यूहन्ना न खाता आया और न पीता, और वे कहते हैं कि उस में दुष्टात्मा है।

19 मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया, और वे कहते हैं कि देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य, महसूल लेने वालों और पापियों का मित्र; पर ज्ञान अपने कामों में सच्चा ठहराया गया है।

संदेह करना हमेशा वुरा नही है . हम इसका इस्तेमाल प्रश्न करने के लिए कर सकते है और वदले हम यीशु पर हमारा विश्वास और भी मजवुत कर सकते है . आज के वचन में शिष्यो ने यीशु को पुछा " जो आनेवाला था वो आप है या हम किसी और का इंतजार करे" . युहन्ना २० ः२७ मे 'यीशु ने थोमा को उसके संदेह के कारण छोड नही दिया वल्की उसको आमंत्रित किया की वो आकर उनके हात और उनके शरीर को छुए, और उसे चुनौती दिया कि वह संदेह करना वंद करे . '

युहन्ना १ ः १९ मे युहन्ना वापत्सिमा देने वाले कहा 'देखो परमेश्वर का मेमना जो संसार के पापो को उठाता है . ' . लेकिन वादमे यीशु के वारे मे संदेह किया . यीशु ने उस संदेह का सामना कैसा किया . मत्ती ११ः ४ से ५ मे यीशु ने प्रेम और संवेदनशील होकर जवाव दिया कि, 'वापस जाकर युहन्ना को जो आप देखते और सुनते है वताओ कि आंधे देखते है, और लंघडे चलते है' . जो संदेह करते है और वचन और परमेश्वर के वारे में प्रश्न पुछते है, उनका विश्वास और भी मजवुत होता है .

कार्य ः यीशु के प्रति अपने आप को फिर से समर्पित करे . उसके प्रति अपने प्रेम को फिर से दिखाए और यीशु को अपना प्रभु वनाइए . उसके साथ अपने रिश्ते को और भी गहरा वनाने के लिए योजना वनाइए .